

कार्यालय के प्रमुख के कलम से

मूगा रेशमकीट बीज संगठन

केन्द्रीय रेशम बोर्ड
वस्त्र मंत्रालय : भारत सरकार
खानापारा, गुवाहाटी - 781022



भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय, केन्द्रीय रेशम बोर्ड के नियंत्रणाधीन कार्यरत मूगा रेशमकीट बीज संगठन(मूरेबीस) एवं एरी रेशमकीट बीज संगठन(एरेबीस), केन्द्रीय रेशम बोर्ड, खानापारा, गुवाहाटी देश के एक गण्यमान्य संस्थानों में से एक है। मूगा रेशमकीट बीज संगठन (मू.रे.बी.सं.) मूगा बुनियादी बीज उत्पादन के लिए पैतृक स्टॉक के रखरखाव के साथ ही विभिन्न राज्यों के रेशम विभागों एवं अभिगृहित बीज पालकों को इसकी आपूर्ति तथा सूक्ष्म मात्रा में व्यवसायिक बीज उत्पादन कर रहा है। वर्ष 2018-19 के दौरान, 6 लाख लक्ष्य के सापेक्ष कुल 7.2 लाख एरी रोमुच का उत्पादन हुआ जो अपनी स्थापना के बाद से सब से अधिक उत्पादन है। सभी उत्पादित रोमुच उत्तर पूर्वी राज्यों के अलावा 8 अलग-अलग गैर - परंपरिक राज्यों में सफलता पूर्वक आपूर्ति की गई है।

वर्ष 2019 के जनवरी से जून की अवधि के दौरान मूगा रेशमकीट बीज संगठन का उत्पादन काफी सरहनीय रहा। वर्ष के प्रथम तिमाही जनवरी से मार्च 2019 की अवधि में मूगा रेशम बीज उत्पादन की उपलब्धि 53.88 % रही। इस तिमाही में मूगा इकाइयों की उपलब्धि 44.06 % तथा मूल बीज उत्पादन की उपलब्धि 28.18% तथा व्यवसायिक बीज उत्पादन की उपलब्धि 68.94% रही। निजी मूगा कीटपालकों के बीज उत्पादन 170.12% दर्ज किया गया। वर्ष के द्वितीय तिमाही अप्रैल से जून 2019 की अवधि में मूगा रेशमकीट बीज उत्पादन की उपलब्धि 46.42% रही। इस तिमाही में मूगा इकाइयों की उपलब्धि 60.49 % तथा मूल बीज उत्पादन की उपलब्धि 37.25% तथा व्यवसायिक बीज उत्पादन की उपलब्धि 46.21% रही। निजी मूगा पालकों के बीज उत्पादन 63.69% दर्ज किया गया। पूर्वोत्तर के राज्यों विशेष रूप से असम जहां मूगा रेशम उत्पादन का महत्व सांस्कृतिक है, मूगा रोग मुक्त बीज के उत्पादन की गुणवत्ता को बरकरार रखने हेतु मूगा रेशम बीज संगठन की अर्ध वार्षिक प्रगति और मूगा के क्षेत्र में किए गए प्रयास उत्पादक और सकारात्मक हैं।

माह जून 2019 तक मू. रे. बी. सं. ने 53032 पी3 रोग मुक्त बीजों की आपूर्ति पूर्वोत्तर राज्यों में पूर्ण किया। राज्य रेशम विभाग असम में 18900, बीटीसी में 9355, मिज़ोरम 12500, मेघालय 3250, नागालैंड में 7592, अरुणाचल प्रदेश में 700, और सिक्किम में 700 रोग मुक्त बीजों की आपूर्ति बीज के मांग पत्र के आधार पर किया गया।

एरेबीसों द्वारा विभिन्न एजेंसियों को 11,10,670 रोमुच की आपूर्ति करके उच्च उपज सी 2 नस्ल का व्यवसायीकरण किया गया। एरीरेबीसों, बोंगरा 114.4%, होसूर 123.3% तथा अविंके, फतेहपुर 164.3% का योगदान उल्लेखनीय रहा।

सेरी मॉडल ग्राम प्रोग्राम (एसएमवीपी) के तहत वर्ष 2018-19 के दौरान कच्चा रेशम उत्पादन मूगा 1.032 मीट्रिक टन और एरी 2.023 मीट्रिक टन है। विस्तार संचार कार्यक्रम में मूगा / एरी किसानों को उत्पादन बढ़ाने के साथ-साथ कीटपालन और बीजागार गतिविधियों के दौरान उनके सामने आने वाली विभिन्न समस्याओं का समाधान करने के लिए 2 मूगा कृषि मेलाएं दिनांक-10.01.2019 को मूरेबीस, पी3 इकाई, नारायणपुर में तथा दिनांक-23.02.2019 को मूरेबीस, पी3 इकाई, तुरा में आयोजित किए गए। एक एरी कृषि मेला दिनांक 14.02.2019 को एरेबीसों, होसूर में आयोजित किया गया। कृषकों के स्तर पर अपनाने हेतु संबंधित क्षेत्रों में बीज उत्पादन की बेहतर प्रौद्योगिकियों को लोकप्रिय बनाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कुल 12 मूगा और 8 एरी जागरूकता कार्यक्रम और मूगा में 12 क्षेत्र दिवस तथा एरी में 8 क्षेत्रीय दिवस आयोजित किए गए। क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम के तहत आयोजित प्रशिक्षण के माध्यम से, मूरेबीस/एरेबीस. ने 60 मूगा और 50 एरी लाभार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। अभिगृहित कीटपालकों को भोज्य पौधों के रख रखाव करने के उन्नत पद्धतियां और कीटपालन व रोग प्रबंधन के विषय पर तथा निजी बीजागारों को गुणवत्तायुक्त बीज उत्पादन एवं प्रबंधन पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

गुणवत्ता बीज उत्पादन तादाद की तुलना में महत्वपूर्ण है। जलवायु परिवर्तन के कारण विशेष रूप से मूगा बीज उत्पादन में होने वाले विभिन्न बाधाओं को जैसे ग्रीष्मकालीन और सर्दियों के दिनों में संकोचन व विस्तार से निपटने के लिए, आगामी वर्षों में कई बैचों में मूगा बीज बनाने के लिए रणनीतिक योजना तैयार की गई है और मूरेबीस गुणवत्ता मूगा और एरी बीज के उत्पादन और आपूर्ति की मांग को पूरा करने के लिए कठिन प्रयास जारी रखेगा।

बी.चौधरी
(बी.चौधरी)

वैज्ञानिक-डी एवं प्रमुख

मूरेबीस, गुवाहाटी में दिनांक 12.03.2019 को आयोजित 74वीं राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करते हुए श्री बी.चौधरी, वैज्ञानिक डी व प्रमुख ।



मूगा रेशमकीट बीज संगठन के तत्वावधान में , क्षेत्रीय कार्यालय, एवं क्षेत्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशम बोर्ड, खानापारा, गुवाहाटी के साथ आयोजित संयुक्त हिन्दी पखवाड़ा के दौरान दिनांक-07.03.2019 को संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें 25 पदधारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में गीत गाते हुए श्रीमती हेमाश्री सैक्या व श्रीमती मीरा भराली ।

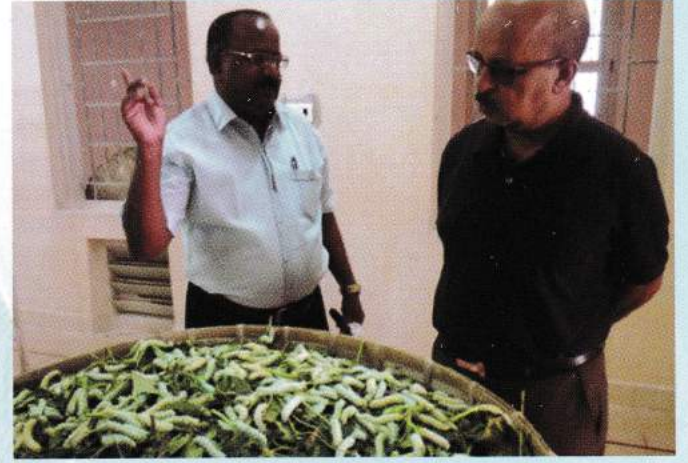


दिनांक 07.06.2019 को मूरेबीस, गुवाहाटी के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय के बैठक कक्ष, गुवाहाटी में आयोजित संयुक्त हिन्दी कार्यशाला में क्षेत्रीय कार्यालय, केंरेबो, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी एवं मूरेबीस के अधीन कार्यरत 13 इकाईयों के राजभाषा कार्यान्वयन कार्य से जुड़े पदधारियों ने भाग लिया। कार्यशाला की महत्वता पर व्याख्यान देते हुए श्री शेख रस्तु बाषा, सहायक निदेशक (राजभाषा)।





दिनांक 08.5.2019 को आयोजित आंतरिक समीक्षा बैठक में मूरेबीस के अधीन कार्यरत सभी इकाईयों के प्रभारी व मूरेबीस मुख्यालय, गुवाहाटी के वैज्ञानिकों को संबोधित करते हुए श्री बी चौधरी, वैज्ञानिक डी व प्रमुख।



दिनांक 14.02.2019 को एरेबीस, होसूर में आयोजित एरी कृषि विज्ञान मेला में प्रदर्शनी का वीक्षण करते हुए श्री रजित कुमार रंजन ओखंडियार सदस्य सचिव, केंरेबो, बेंगलूर।



दिनांक 14.02.2019 को एरेबीस, होसूर में आयोजित एरी कृषि विज्ञान मेला में भाग लेते हुए केन्द्रीय रेशम बोर्ड के अध्यक्ष श्री के.एम. हनुमंतरायप्पा ।



दिनांक 10.01.2019 को पी3 इकाई, नारायणपुर में आयोजित मूगा कृषि विज्ञान मेला को संबोधित करते हुए मूरबीस, गुवाहाटी के श्री बी चौधरी, वैज्ञानिक डी व प्रमुख ।



दिनांक 14.02.2019 को एरेबीस, होसूर में आयोजित एरी कृषि विज्ञान मेला का वीक्षण करते हुए श्री पलनी सामी, मुख्य मंत्री, तमिलनाडु।



दिनांक 23.02.2019 को पी4 इकाई, तुरा में आयोजित मूगा कृषि विज्ञान मेला को संबोधित करते हुए श्री प्रभात बरपुजारी, वैज्ञानिक डी



दिनांक 22 से 27 जनवरी, 2019 तक आयोजित एरी अभिगृहित बीज कीटपालकों का आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते हुए प्रशिक्षणार्थी ।



नव नियुक्ति वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 11.02.2019 से 14.02.2019 तक मूरेबीस, गुवाहाटी में आयोजित मूलभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक झलक ।



दिनांक 22 से 25 मार्च, 2019 तक आयोजित एरी अभिगृहित बीज कीटपालकों का आवश्यकता आधारित प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेते हुए प्रशिक्षणार्थी ।



दिनांक 01.03.2019 से 15.03.2019 तक आयोजित स्वच्छ भारत पखवाड़ा समारोह में मूगा रेशमकीट बीज संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय एवं क्षेत्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान केन्द्र, केन्द्रीय रेशमबोर्ड, गुवाहाटी को सम्बोधित करते हुए श्री एच.के. माली, अधीक्षक (प्रशा.)



नव नियुक्ति वैज्ञानिकों के लिए दिनांक 11.02.2019 से 14.02.2019 तक मूरेबीस, गुवाहाटी में आयोजित मूलभूत प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक झलक ।



दिनांक 01.03.2019 से 15.03.2019 तक आयोजित स्वच्छ भारत पखवाड़ा के समापन समारोह में पुरस्कार विजेताओं को पुरस्कृत करते हुए मूगा रेशमकीट बीज संगठन, गुवाहाटी के श्री बी. चौधुरी, वैज्ञानिक-डी एवं प्रमुख



दिनांक 21 मई, .2019 को आयोजित "आतंकवादी विरोधि दिवस" में सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को संबोधित करते हुए मूरेबीसं, गुवाहाटी के श्री शेख रम्तु बाषा, निदेशक (राजभाषा)



दिनांक 01.03.2019 से 15.03.2019 तक आयोजित "स्वच्छ भारत पखवाड़ा" समारोह में तेतेलिया प्राथमिक विद्यालय में "स्वच्छता कार्यक्रम" को सम्बधित करते हुए श्री आशिष कुमार पाल, वैज्ञानिक-डी एवं श्री बितोपन दास, वैज्ञानिक-सी



दिनांक 31.05.2019 को आयोजित "विश्व तंबाकू निषेध दिवस" के अवसर पर गुवाहाटी में स्थित कॅरेबो के कार्यालय में कार्यरत पदधारियों को वचनबद्धता दिलाते हुए श्री बी चौधरी, वैज्ञानिक डी व प्रमुख, मूरेबीसं, गुवाहाटी ।

पेब्राइन बीजाणु को पता लगाने की पद्धति

Method of Pebrine spore detection:

(मातृ शलभ परीक्षण के अपकेन्द्री पद्धतियों)

(Centrifugal methods of mother moth examination)

डॉ बी एन सरकार, वैज्ञानिक डी
मूरेबीस, गुवाहाटी

1. 1000 मि.ली. पानी में 8-9 ग्र. K_2CO_3 को मिलाइए, यह 0.8 - 0.9 % K_2CO_3 मिश्रण बनेगा।
2. 20 शलभों के लिए @10मि.ली के हिसाब से 200 मि.ली मात्र का 0.8 - 0.9 % K_2CO_3 मिश्रण अपेक्षित है।
3. ग्राइन्डिंग मशीन में उक्त शलभों के नमूनों को 3 से 4 मिनट तक मिश्रित करें।
4. काटन के जरिए मिश्रण को छानिए और शेष मिश्रण को सेंट्रीफ्यूज ट्यूब में रखिए, प्रत्येक ट्यूब में मिश्रण एक-समान होना चाहिए।
5. मिश्रण को 3 से 4 मिनट के लिए 4000 - 5000 rpm में सेंट्रीफ्यूज की जिए।
6. सेंट्रीफ्यूज के तल पर जमा हुआ सेडिमेंट को रखिए और उपर का मिश्रण को फेक दी जिए।
7. सेडिमेंट के साथ 0.8% K_2CO_3 मिश्रण को मिलाइए और मैक्रोस्कोपिक स्लड्स बना कर काम्पाईड सूक्ष्मदर्शी (15 x 40) या (15 x 45) में देखें।
8. 0.8% K_2CO_3 मिश्रण के तुलना में 1:10 मि.ली 0.8- 0.9 % KOH मिश्रण मूगा प्यूपा परीक्षण के लिए अत्यधिक प्रभावकारी होता है।
9. लार्वा अवस्था में पेब्रिन बीजाणुओं का पता लगाने के लिए लार्वों की पूर्ण शरीर को मिश्रण बनाना जरूरी है।



Centrifugal methods of mother moth examination

पदोन्नति

श्रीमती हेमाश्री सैक्या, सहायक अधीक्षक

दिनांक 12.02.2019 को उच्च श्रेणी लिपिक से अधीक्षक पद पर पदोन्नति मिली है।

नवनियुक्ति वैज्ञानिक:

डॉ के इंद्रकुमार, वैज्ञानिक बी:

दिनांक 27.03.2019 को मूरेबीस के अधीन कार्यरत पी4, इकाई, तुरा में वैज्ञानिक बी के रूप में कार्यभार रिपोर्ट दिया है।

श्री विक्रम कुमार वैज्ञानिक बी:

दिनांक 27.03.2019 को मूरेबीस के अधीन कार्यरत पी3, इकाई, रोमपारा में वैज्ञानिक बी के रूप में कार्यभार रिपोर्ट दिया है।

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति:

श्री तिसिलोंगसे संगतम, ग्रेड I. चालक

दिनांक 07.04.2019 को स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति पर केन्द्रीय रेशम बोर्ड की सेवा से सेवा-निवृत्त हुए।

स्थानांतरण:

श्री एस एन चोधरी, सहायक अधीक्षक

दिनांक 31.05.2018 को मूरेबीस, गुवाहाटी से अधीक्षक पद पर पदोन्नति के साथ क्षेत्राकें, बोको में स्थानांतरण हुआ।

श्री जीतेन काकती, तकनीकी सहायक

दिनांक 31.05.2019 को पी4, इकाई, तुरा, से क्षेत्रीय, कार्यालय, कैरेबो, गुवाहाटी में स्थानांतरण हुआ।

श्री बीरेन्द्रचंद्र डेका, सहायक तकनीशियन

दिनांक 31.05.2019 को पी3, इकाई, नोंगपोह से पी3, इकाई, हहीम में स्थानांतरण हुआ।

श्री रणकांत बोरो, सहायक तकनीशियन

दिनांक 31.05.2019 को पी3, इकाई, हहीम से पी3, इकाई, नोंगपोह में स्थानांतरण हुआ।

श्री जडुमनी हजारीका, वरिष्ठ क्षेत्र सहायक

दिनांक 31.05.2019 को पी3 इकाई, कोवाबिल से मूएवप्रसं, लाडाइघड में स्थानांतरण हुआ।

श्री एस डी संम्मा, एम.टी.एस

दिनांक 20.06.2019 को पी4, इकाई, तुरा से पी4, इकाई, मेंदीपथार में स्थानांतरण हुआ।

श्री कुन्दु तेरन, एम.टी.एस

दिनांक 29.06.2019 को मूरेबीस, कलियावारी से मूरेबीस, गुवाहाटी में स्थानांतरण हुआ।

श्री चित्र मोहन राभा, एम.टी.एस

दिनांक 30.06.2019 मूरेबीस, गुवाहाटी से क्षेत्राकें, जोरहट में स्थानांतरण हुआ।

मूगा रेशम कीट बीज संगठन के तहत रोग मुक्त बीजों का उत्पादन और आपूर्ति व सफल कीटपालन – दिशा-निर्देश



श्रीमती निजरा भुयां बरूवा
वैज्ञानिक डी
मूरेबीसं, गुवाहाटी

मूगा रेशम कीट बीज संगठन को अनिवार्य रूप से अपने 2 पी4 इकाइयों, 8 पी3 इकाइयों और 2 व्यवसायिक इकाइयों के माध्यम से पूर्ण रूप में बीज गुणन कार्यक्रम को जारी रखने के लिए रोग मुक्त चकतों का उत्पादन जारी रखना है।

बीज किसी रेशम उद्योग के लिए रीढ़ है। इसलिए मूरेबीसं को रोग मुक्त मूगा बीज प्राप्त करने के लिए कुछ दिशा-निर्देश (प्रोटोकाल) का अनिवार्य रूप से पालन करते हुए पूरे उत्तर पूर्व क्षेत्र के मूगा रेशम उद्योग के लिए सबसे महत्वपूर्ण अवदान दे रहा है। निम्नलिखित दिशा-निर्देशों को बीज उत्पादक इकाइयों के द्वारा अनुपालन किया जाना चाहिए:

क. परीक्षण:

- बीज कोसा की खरीदी के पहले कम से कम 50 मदा प्यूपा का परीक्षण करना चाहिए। यह परीक्षण इकाइयों के निजी कोसों के लिए भी जरूरी है।
- अंडजनन के चौथे दिन मातृ शलभ का परीक्षण किया जाना चाहिए।
- केवल फुजिवारा तकनीक का पालन करके सभी परीक्षण का संचालन करें।
- प्रत्येक नमूने के न्यूनतम पांच सूक्ष्म क्षेत्रों की जांच करें।
- बीजागार में शलभ परीक्षण के दौरान और बाद में उचित स्वच्छता और कीटाणु शोधन सुनिश्चित करें।

ख. अंडे परिशोधन, सुखाना व पैकिंग:

- 2% फॉर्मालिडिहड घोल में अंडे को 1-2 मिनट के लिए डूबा के रखने के बाद बहते हुए पानी में धोना है। फिर से पानी में हल्के डिटर्जेंट या लार्डफबॉय साबुन से धोना चाहिए। बाद में पुनः पुनः बहते हुए पानी में धोना चाहिए। फिर छाया के नीचे सुखाने के लिए सोखता कागज पर धोए हुए अंडे फैलाएं। सीधे पंखे के नीचे सुखाने से बचें।
- 22x11x2 साइज के सेमी लकड़ी - कपड़े वाले अंड के बक्से में 100 ग्राम अंडे पैक करें और 25 डिग्री सेल्सियस तापमान और 85% आर्द्रता पर ऊष्मायन के तहत रखें।
- बॉक्स पर एक लेबल चिपकाएं जिसमें स्रोत, अंडे देने की तारीख, परिमाण और अनुमानित स्फुटन की तारीख का संकेत हो।

ग. अंडों का परिवहन:

- हैंडबैग या पॉलीथीन बैग के अंदर अंडे के बक्से को कभी न ले जाएं।
- छिद्रित प्लास्टिक बास्केट या छिद्रित कार्टून बक्से में दिन के ठंडे समय के दौरान 21x11x2 साइज के सेमी आकार के अंडे के बक्से में उचित संवातन प्रदान करते हुए अंडे का परिवहन करें। बक्से के बीच कुछ लकड़ी के टुकड़े डालकर परिवहन के दौरान अंडे के बक्से के बीच पर्याप्त दूरी संवातन / वायु परिसंचरण सुनिश्चित करें।
- परिवहन के दौरान अंडे सूरज की सीधी रोशनी / गर्मी / किसी रसायनिक द्रव्य के संपर्क में नहीं आना चाहिए।

- गर्मियों के दौरान, स्फुटन से बचने के लिए नम कपड़े के तहत अंडे के बक्से को परिवहन करें। परिवहन के दौरान तापमान को कम करने के लिए टोकरी / बॉक्स के चारों तरफ तल पर गीला फोमपैड रखना प्रभावी है।

घ. अंड ऊष्मायन:

- 85% आर्द्रता और 25-26 डिग्री सेल्सियस के तापमान में अंडे रखना चाहिए।
- समकालीन स्फुटन के लिए स्फुटन के पहले जब अंडे "पिन हेड" अवस्था में आते हैं तब 48 घंटों के लिए अंडे को ब्लॉक बाक्सिंग करना चाहिए या जब अंडा "ब्लू एग" की स्थिति को प्राप्त करता है तो 24 घंटों के लिए ब्लॉक बाक्सिंग करना चाहिए।

ड. ब्रशिंग और कीटपालन के प्रथम अवस्था के दौरान ध्यान देने की बातें:

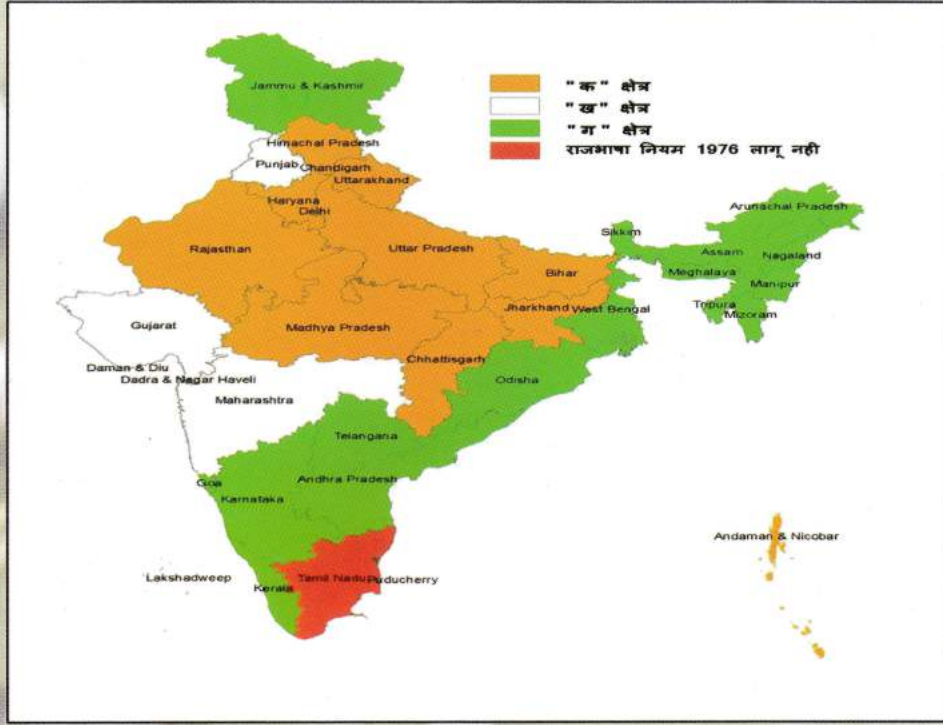
- नवजात कीड़ों को (चॉकी प्लॉट) में गर्मियों के दिनों में सूर्य की विपरीत दिशा में और सर्दियों के दिनों में सूर्य के प्रकाश की ओर ब्रशिंग करें। तृतीय अवस्था तक खिलाने के लिए पत्ते की उपलब्धता का आकलन करने के बाद 2-3 रोग मुक्त चकतों के लिए एक पेड चुन के ब्रशिंग करें। 1-3 वें दिन तक निकले हुए कीड़ों को बार बार हाथ नहीं लगाना चाहिए तथा बार बार स्थानांतरण नहीं करना चाहिए।
- हानिकारक कीट और दुश्मनों (कौआ, सांप, चिड़ियों) के हमले से बचाने के लिए पेडों पर नायलॉन नेट (10.5 x 7.5 x 4 मीटर) का इस्तेमाल करें।
- कीटपालन के दौरान हानिकारक कीटों और दुश्मनों से बचाने के लिए निरंतर निगरानी रखें।
- आपत्कालीन स्थिति (तेज हवा, अत्याधिक बारिश व होले वाली बारिश) में नवजात कीड़ों को घर के अंदर ही कुछ दिनों के लिए पालन करें।
- कीड़ों को पेड से नीचे उतरने व दुश्मनों (कौआ, सांप, चिड़ियों) को पेड पर चढ़ने से रोकने के लिए पेड में पॉलिथान शीट बंधना चाहिए।

छ. कीटपालन के लिए सही क्षेत्र का चयन:

- ग्रीष्मकालीन कीटपालन के लिए ठंडा और छाया वाले सुष्क क्षेत्र का चयन किया जाना चाहिए। सर्दियों के दिनों में कीटपालन के लिए सूर्य की रोशनी के जगाओं को चुनना चाहिए।
- पहाड़ी इलाखों और पहाड़ी तल हटी जगाओं में ग्रीष्मकालीन कीट पालन के लिए शीतल क्षेत्र का चयन करें।

राजभाषा नियम, 1976

हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है



- हिंदी के अनुमानित ज्ञान के आधार पर देश के राज्यों/संघ शासित प्रदेशों को तीन क्षेत्रों, यथा - क, ख, ग में परिभाषित किया गया है।

भाषा क्षेत्र	राज्य/संघ राज्य
'क'	बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य हैं
'ख'	गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य
'ग'	उपरोक्त निर्दिष्ट राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल भाषाएं।

- | | | | | |
|------------|------------|-------------|-------------|------------|
| 1. असमिया | 6. काँकणी | 11. नेपाली | 16. मराठी | 21. सिंधी |
| 2. उडिया | 7. गुजराती | 12. पंजाबी | 17. मलयालम | 22. हिन्दी |
| 3. उर्दू | 8. डोगरी | 13. बांगला | 18. मैथिली | |
| 4. कन्नड | 9. तमिल | 14. बोडो | 19. संथाली | |
| 5. कश्मीरी | 10. तेलुगु | 15. मणिपुरी | 20. संस्कृत | |

संपादक

बी चौधरी रेशमकीट बीज संगठन, वैज्ञानिक डी व प्रमुख,
शेख रन्तु वापा, सहायक निदेशक (राभा)
विभाष चन्द्र देव उच्च श्रेणी लिपिक
मृगा रेशम कीट बीज संगठन, केरेबो रेशमनगर, खानापारा
वस्त्र मंत्रालय- भारत सरकार, गुवाहाटी- 781022